



# हिन्दी साहित्य

## HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे  
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250  
Maximum Marks: 250

नाम (Name): सोनेल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? ☐ हाँ ☒ नहीं ☐

मोबाइल नं. (Mobile No.): \_\_\_\_\_

ई-मेल पता (E-mail address): \_\_\_\_\_

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04, 27<sup>th</sup> Aug, 2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

|   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 0 | 2 | 2 | 1 | 4 | 0 |
|---|---|---|---|---|---|---|

विद्यार्थी के हस्ताक्षर

(Student's Signature): [Signature]

### Question Paper Specific Instructions

*Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:*

There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 109

टिप्पणी (Remarks): अच्छा जवाब  
आभात करे (ह)



641, प्रथम तल, मुख्य नगर, दिल्ली-9  
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356  
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiias.com  
फेसबुक: facebook.com/drishtiivisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation



### SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया संख्या न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) हरिमुख निरखि निमेष बिसारे।

ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे॥

घूँघटपट छाँड़े बीधिन महँ अहनिसि अटत उधारे॥

सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे॥

सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।

करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे॥

अपरोक्ष पंक्तिओं श्रीरदास पदावली के 'अमरगति'  
से ली गई हैं। इन पंक्तिों द्वारा गौपिकी  
के उच्चता की आत्मा की है।

1/10



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

- (ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त  
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;  
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,  
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत काव्यंश व्याथावाद के प्रमुख सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना 'राम की शक्तिपूजा' से लिया गया है। 'राम की शक्तिपूजा' निराला की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में उद्धोद्धित है। इस रचना के माध्यम से कवि ने कई संश्लिष्ट पक्षों का निरूपण किया है; जैसे - 'सीता-मुक्ति' के प्रतीक से 'नारी-मुक्ति' की चेतना, राष्ट्रीय चेतना, 'राम' के पारलौकिक रूप का मानवीकरण, सत-असत अन्वेष इत्यादि।

असल अरोक्त पंक्तियाँ कविता के मध्य भाग से उद्धृत हैं। यहाँ जाम्बवान द्वारा राम की शक्ति-पूजन के लिए उल्साहित किया गया है। राम जब 'भीमा' रूपी शक्ति को रावण को 'अंक' लिए देखने हैं, तब उनमें निराला एवं पराजय भावना भरने लगती है। और वे कह उठते हैं -

'मित्रवर! विजय होगी न समर।'

ऐसे में जाम्बवान जो कि वृद्ध एवं व्यावहारिक ज्ञान-कुशल हैं, सारी बात जानकर राम को



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शक्ति के "दृढ़ आराध्यन" की युक्ति सुझाते हैं। वे कहते हैं कि रावण यदि अर्नैतिक होकर भी शक्ति को धारण कर सका है, तो निश्चय ही साधना एवं नैतिकता का समन्वय होने पर तुम भी शक्ति को सिद्ध कर पाओगे।

वे राम को 'शक्ति की मौलिक कल्पना' के लिए प्रेरित करते हैं। इसके परिणामस्वरूप राम प्रकृति में ही पर्वत-रूपी पार्वती की कल्पना कर शक्ति-पूजा करते हैं। शक्ति-पूजन सम्पन्न कर वे शक्ति से आशीर्वाद भी प्राप्त कर पाते हैं -

"होगी जय! होगी जय! हे पुरुषोत्तम नवीनो"

ध्यातव्य है कि इन पंक्तियों में शक्ति की मौलिक कल्पना का जो विचार व्यक्त हुआ है, वह इस रचना का एक केन्द्रीय भाग भी है। इस शक्ति-चेतना के आधार पर डॉ. निर्मला जैन ने इस रचना की 'शक्ति-काव्य' के रूप में देखा है। इन पंक्तियों में यह भी व्यक्त होता है कि यद्यपि शक्ति 'आराध्यन' के पद में है, किन्तु यदि नैतिक और अर्नैतिक दोनों पद आराध्यना करें, तो सिद्धि नैतिक पद की ही होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

6/10



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

- (घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,  
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।  
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,  
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गाता।

उपरोक्त पंक्तियाँ अयशंकर प्रसाद कृत 'कामायनी' से उद्धृत हैं। अयशंकर प्रसाद व्याघ्रवादी कवि हैं तथा उन्होंने 'कामायनी' के माध्यम से अपने दर्शन का प्रतिपादन किया है।  
कामायनी 15 सर्गों की रचना है। उपरोक्त पंक्तियाँ 'श्रद्धा सर्ग' से उद्धृत हैं।

'श्रद्धा सर्ग' कामायनी का तीसरा सर्ग है। इस सर्ग में 'गन्धर्वों के देश' की कन्या 'श्रद्धा' देव सभ्यता के एकमात्र वंशज 'मनु' से मिलती है। 'मनु' देवसभ्यता के नष्ट हो जाने से चिंता, निराशा की स्थिति में है। उसे जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास होता है -

“ जीवन मेरा क्षुद्र अंश है,  
व्यक्त नील व्यन माला में।  
सौंदर्यामिनी संधि-सा सुंदर,  
क्षण भर रहा उज्जाला में ॥ ”

श्रद्धा को से मिलकर मनु की भाश्चर्य-मिश्रित र्ष होता है। श्रद्धा मनु को अपना जीवन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दर्शन, जो कि 'प्रत्यभिज्ञा' अथवा 'आनंदवाद' है, वह बताती है।

दरअसल यह दर्शन स्वयं प्रसाद का है जिसे वे 'श्रद्धा' के द्वारा व्यक्त करते हैं। 'आनंदवाद' के अनुसार के साथ-साथ प्रसाद की इस रचना में प्रॉयड के मनोविश्लेषणवादी विचारधारा का भी प्रभाव है। प्रॉयड के अनुसार मनुष्य की मूल चेतना 'लिविडो' है। श्रद्धा इन पंक्तियों में मनु को मिराशा त्यागकर जीवन की नई संभावनाओं को तलाशने के लिए प्रेरित करती है। 'शैवाक्षैतवाद' अथवा

'कामाध्यात्मवाद' यह मानता है कि आध्यात्म की प्राप्ति 'काम' के मार्ग से ही सकती है।

उपरोक्त पंक्तियों में श्रद्धा की प्रेरणा से मनु नई ऊर्जा से भर उठता है, एवं श्रद्धा के साथ मिलकर मानव सभ्यता का निर्माण करता है।

'कामायनी' को आधुनिक हिंदी साहित्य का सबसे सफल महाकाव्य माना जाता है। उदात्त उद्देश्य, चरित्र एवं भाषा शैली इसके महाकाव्यत्व को स्थापित करते हैं।

6

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,  
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!  
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"  
वह एक और मन रहा राम का जो न थाका;

उपरोक्त पंक्तियाँ निराला कृत 'राम की शक्ति-पूज्य' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ कविता के अंतिम भाग से ली गई हैं।

'राम' ने आत्मलवान की सलाह मानकर शक्ति 'सीता-मुक्ति' के उद्देश्य से शक्ति-पूजन का संकल्प लिया है। इसके लिए वे एक सीता और 'इंदीवर' से पूजन करते हैं। किन्तु जब अंतिम 'इंदीवर' का अर्पण करने का समय आता है, तो वे 'इंदीवर' न पाकर आत्मधिकार की भावना से भर उठते हैं।

राम कहते हैं कि जिस जीवन में सदा सात्विक, नैतिक, आदर्श मूल्यों के आचरण पर ~~अचर~~ आचरण किया, यदि उनकी 'प्रिया' जानकी की मुक्ति न हो सकी, तो उन मूल्यों का क्या औचित्य है। तभी राम का 'एक और मन' उभर खड़ा होता है, जो 'देव्य' और 'विनय' नहीं जानता। वह मन सीता के प्रेम के कारण इस प्रकार दृढ़ है कि अपनी 'प्रिया का उद्धार' करने के लिए कुछ भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या को अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

करने की तैयार हैं। राम की तब स्मरण होता है कि उनकी माता उन्हें 'राजीवनयन' बुलाती थी; और तब वे अपनी नयन खी लमल की अर्पण करने की दृढ़ हो जाते हैं-

“दी नीलकमल है शेष अग्री यह पुरश्चरण,  
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।”

उपरोक्त पंक्तियाँ एक तरह से इस कविता का सारतत्व हैं; विशेषकर 'वह एक और मन रहा राम का'। निराला का काव्य वैयक्तिकता एवं आत्म-संघर्ष का काव्य रहा है। 'सरीज-स्मृति' की अखंड निराशा, 'राम की शक्तिपूजा' में भी दिखती है। किन्तु 'राम की शक्तिपूजा' की यह पंक्ति मानो निराला के संघर्ष में उनके पुनः दृढ़ निश्चयी होने का बोध करती है। इस कारण से कुछ समीक्षक इस रचना को 'सरीज-स्मृति' का अगला चरण मानते हैं, जिसमें निराला अपने जीवन के संघर्षों से लड़ने के लिए एक नई ऊर्जा से संपन्न होने दिखते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये।

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(कामायनी 'मानव' जायावादी कवि प्रसाद द्वारा कृत रचना है। 'कामायनी' के विषय में एक मत है कि यह एक 'रूपक - काव्य' है।

डॉ. तगैन्द्र के अनुसार कामायनी का 'रूपक - काव्य' होने का मतलब पश्चिम के ऐलिगरी (ऐलिगरी) (allegory) से है। अर्थात् जिस कथा में प्रस्तुत कथा के समानान्तर एक अप्रस्तुत कथा भी व्यक्त हो रही हो।

इत अप्रस्तुत कथाओं में एक कथा मानव-मन एवं मानवता के विकास की कथा है। 'मानव-मन' अपने वातावरण में 'आणव' अर्थात् मै की स्थिति में होता है। यही स्थिति कामायनी में 'भनु' की भी है। पारिवारिक परिवेश में मानव-मन में स्वाभाविक रूप में शब्द का भाव विकसित होता है। इसके बाद



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जब उसकी तर्क बुद्धि प्रबल होती है,  
तब वह भौतिक सुखों की ओर  
गिरता है। कामायनी का मनु भी इसी  
अत्यंत बौद्धिक शक्ति के सा-संपर्क  
में आने से विराग के द्वारा भौतिक  
सुखों के लिए प्रयास करता है। पुनः  
भौतिक सुखों के अतिरेक के बाद जब  
उसे असंतोष की भावना होती है, तब  
श्रेष्ठ के माध्यम से उसे आध्यात्म एवं  
आनंद की प्राप्ति होती है।

इसी प्रकार मानव सभ्यता  
के आरंभ में चिंत। ही मनुष्य का पहला  
भाव था। जब उसे प्रकृति के का स्तान  
हुआ, तब श्रेष्ठ भाव प्रबल था।  
तत्पश्चात् भौतिक ज्ञान से वैज्ञानिक क्रांति  
के द्वारा मनुष्य ने बौद्धिक क्षमताओं  
का उपयोग कर लिया। किन्तु तब भी



कृपया इस स्थान में प्रश्न  
संख्या के अतिरिक्त कुछ  
न लिखें।

(Please do not write  
anything except the  
question number in  
this space)

संतीय न पाकर का संस्कृति एवं  
विज्ञान के समन्वय को ही मानव  
जीवन का उद्देश्य माना।

अच्छा पत्र/प

धोड़ा बिलाल है

10  
20

कृपया इस स्थान में  
कुछ न लिखें।

(Please don't write  
anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये।

कामायनी व्यासवादी कवि जयशंकर प्रसाद की रचना है। इस रचना के अंगीरस के संदर्भ में हिन्दी साहित्य में विभिन्न मत हैं।

किसी भी रचना के अंगीरस का निर्धारण तीन आधारों पर किया जा सकता है -

क) प्रथम यह है रचना में किस रस की बहुव्याप्ति है।

ख) दूसरा यह कि रचना का भावक किस रस की अभिव्यक्ति करता है।

ग) तीसरा यह कि रचना की परिणति में कौन सा रस व्याप्त है।

कामायनी के संदर्भ में अंगीरस का निर्धारण हम इनहीं आधारों पर करेंगे।

काव्यशास्त्रीय परंपरा के अनुसार रचनाओं के अंगीरस केवल तीन हो सकते हैं -

वीर, भृंगार एवं शांत ।

कामायनी के अंगीरस के संदर्भ में रसवादी समीक्षक डॉ. त्रैलोक्य जी महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कामायनी के में यदि बहुव्याप्ति की बात करें, तो किसी एक रस को अंगीरस नहीं माना जा सकता। अहाँ 'काम' सर्ग, 'वासना' सर्ग में शृंगार के संयोग पद का चित्रण है एवं 'कव्यना' सर्ग में विप्रलंभ का, वहीं 'रहस्य सर्ग', 'आनंद' सर्ग में शांत रस दिखाई पड़ता है।

नायक द्वारा अभिव्यक्त होने वाले रस में भी प्रायः अन्तर्लक्ष्य दिखती है। दूसरी बात यह कि 'मनु' को नायक मानने को लेकर भी विवाद है।

तीसरा प्रतिमान जो कि रचना की परिणति पर ही निर्धारित करता है कि रचना का अंगीरस क्या है, वह इस रचना के लिए उचित जान पड़ता है। स्वयं प्रसाद ने भी 'कामायनी' के अंगीरस निर्धारण के बारे में स्पष्ट कहा कि इसका निर्धारण परिणति के आधार पर होना चाहिए।

इस आधार पर 'कामायनी' का अंगीरस 'शांत' है। यह शांत 'आनंदमूलक' है, न कि शममूलक शांत।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।  
(Please don't write anything in this space)

(निर्वेद) सर्ग में मनु जिस स्थिति में होता है, वह 'शमभूलक' शांत है; क्योंकि वहाँ कोई आशा, उत्साह, उमंग नहीं है। वहीं, 'आनन्द' सर्ग में जब मनु को जीवन में विषमता के कारण व समाधान प्राप्त हो जाते हैं, तो वह आनन्दभूलक शांति की स्थिति में चला जाता है।

“समरस थे अहं या चैतन,  
सुंदर साकार बना था।  
चैतन्य एक विलसती,  
आनंद अखंड व्यन था।”

स्पष्ट है कि कामायनी का अंगीरस है  
“आनंदभूलक शांत”।

31-41  
8 1/2  
15



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शक्ति-काव्य की परंपरा भारतीय नहीं,  
अपितु पश्चिमी साहित्य की परंपरा है।

'राम की शक्ति-पूजा' के संदर्भ में भी  
यह कहा गया है कि यह शक्ति काव्य का  
उदाहरण है।

डॉ. निर्मला जैन ने अपने लेख -

“ शक्ति काव्य के प्रतिमान - राम की शक्ति पूजा ”  
में इस रचना की शक्ति-काव्य के  
रूप में देखा है। किसी भी रचना में  
शक्ति-काव्य होने के लिए निम्न ~~आ~~ प्रतिमानों  
का होना आवश्यक है -

क) रचना भौम गुण सम्पन्न हो -  
कथानक एवं ~~वि~~ भाषा दोनों के  
ही स्तर पर

ख) शक्ति चेतना ही रचना का मुख्य  
उद्देश्य हो

'राम की शक्ति पूजा' इन सभी प्रतिमानों पर  
खरी उतरती है। कथानक में युद्ध का वर्णन,  
राम के सभी सहायकों का वर्णन, छ



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

श्रीज-गुण सम्पन्न हैं -

“ उद्गीरित- वदनि - श्रीम- पर्वत - कवि- चतुः-प्रध्वं ”

रचना में ध्वनि योजना के द्वारा निराला ने श्रीज-गुण का प्रक्षेपण किया है।  
अब हनुमान कुछ होकर महाकाश की ओर बढ़ते हैं, तो वे अद्भुत ऊर्जा-शक्ति से भरे होते हैं। रचनाकार ने हनुमान की इस अवस्था को व्याख्यायित करते हुए कहा -

“ कुछ कवि विषम दूह । ”

इसके अतिरिक्त पूरे कथानक में शक्ति-चेतना मबल पड़ा है। शुरु में राम की शक्ति का क्षीण होना -

“ खि हुआ अस्त ”,

पश्चात् जाम्बवान द्वारा प्रेरित करने पर

“ शक्ति की मौलिक कल्पना ”

एवं अंत में ,

“ कह महाशक्ति हुई राम के वदन में लीन । ”  
ये सभी पंक्तियाँ व्योमक हैं इस बात की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कि शक्ति-चेतना इस रचना में प्रचुर मात्रा में है। अतः इसे शक्ति-काव्य कहा जा सकता है।

31-41

$$\frac{8\frac{1}{2}}{15}$$

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



## SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलूम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

उपरोक्त पंक्तियों मन्नु भंडारी द्वारा रचित  
'महाभोज' से ली गई हैं।  
उपन्यास

यह संवाद 'महेश' नामक चरित्र  
का 'सक्सेना' नामक चरित्र से है।  
महेश एक विशेषज्ञ है जो किसी रिसर्च  
के सिलसिले में 'सरोहा' आता है।  
वहाँ उसकी जान-पहचान 'बिसू' से होती है।  
'बिसू' की हत्या के बाद 'सक्सेना' जो कि  
एस.पी. है, महेश का बयान लेने उसे  
पुलिस थाने बुलाते हैं।

'महाभोज' में लेखिका ने बुद्धिजीवियों  
के सामाजिक पार्थिव्य की ओर ध्यान खींचा  
है। वे दिखाती हैं कि किस प्रकार आज  
का बुद्धिजीवी वर्ग संपैकशील व्यवहारों से  
तटस्थ होता जा रहा है। उपरोक्त पंक्तियों



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

के माध्यम से 'बिस्म' 'मोहर' से यही सवाल पूछता है कि जब स्वामी निम्न वर्ग के लोगों के साथ इतना अन्याय हो रहा है तो आप तत्स्थ होकर सिर्फ 'रिसर्च' कैसे करती रह सकते हैं।

ये पंक्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नि क्योंकि ये 'सकसैन' के व्यक्तित्वांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

Q. 11  
52/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त गद्यांश भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'भारत - दुर्दशा' नाटक से लिया गया है। यह नाटक 'नवजागरण' की चेतना से युक्त है।

यह 'नवजागरण' चेतना में निहित होता है कि हम आत्मावलीकृत और अपनी कमियों को पहचानें। 'भारत - दुर्दशा' में भारतेन्दु ने भी यही प्रयास किया है। 'मदिरा', 'धर्म', 'आलस्य' जैसे काल्पनिक प्रतीकों के माध्यम से भारतेन्दु बताते हैं कि हम अपनी आंतरिक कमजोरियों के कारण ही दुर्दशा के शिकार हैं।

इसी क्रम में वे उत्थान की औरवर्णन व्याख्या करते हैं एवं प्रमत्त वर्तमान की दुर्दशा भी दिखाते हैं। उपरोक्त पंक्तियों में भारतेन्दु कहते हैं कि हम जान-बूझकर सोए हैं।



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वै इसके द्वारा दिखाना चाहते हैं,  
कि दुर्दशा जानने के बाद भी मध्यवर्गीय  
बुद्धिजीवी देश की दशा को सुधारने  
का कोई प्रयास नहीं दिखा रहे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5/10

समाधान  
क-4  
के बराबर



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ नि. नि. मन्तू गंडारी कृत  
महाभोज से ली गई हैं। बिस्मू की  
हत्या के बाद अब उसका बि. दोस्त  
(बिंदा) पुलिस स्टेशन में अपना बयान देने  
आता है तब वह ये बातें कहता है।

एस. पी. सक्सेना से बिंदा बताता  
है कि किस प्रकार 'जोरावर' जैसे लोग  
गौँववालों पर जुल्म करते हैं। वह बताता  
है कि आतंक के कारण गौँववालों के  
सुँह बंद हो गए हैं। आज मैं बिंदा, आक्सिचरी  
को जला देने के बाद भी बेचारे जुल्म नहीं  
बोले।

इसी क्रम में बिंदा सक्सेना को  
बताता है कि बिस्मू की हत्या इसलिए हुई  
कि वह गौँववालों के लिए लड़ता चाहता  
था। सक्सेना द्वारा बिंदा का बयान ,  
इस उपन्यास की महत्वपूर्ण कड़ी है,



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जिसके बाद सर्वसैन्य अंतर्द्व से गुजरने हुए 'बिस्म' और 'बिंदो' की इस लड़ाई की आगे ले जाने की तरफ लेते हैं।

4/2/12  
बैरव चव्हाण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आजाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।  
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त कथन महात्मा के एक प्रमुख चरित्र 'दा साहब' का है। 'दा साहब' मुख्यमंत्री हैं, साथ ही सर्वोच्च नेता। वे अपने भीतरी चरित्र को व्युत्पाकर नकली आदर्शवादी चरित्र का प्रक्षेपण करते हैं। उपरोक्त कथन उन्होंने उनके सहायक 'लालन सिंह' को कहा है।

वे लालन सिंह को समझाते हैं कि अखबारों को स्वतंत्र होना चाहिए। उन पर अपने स्वार्थ के लिए राजनीतिक दबाव बनाना सही नहीं है। वे अखबार को 'दर्पण' की संज्ञा देते हैं।

किन्तु अन्त्यास के अगले हिस्से में वे स्वयं ही 'मशाल', अखबार के 'दत्ता बाबू' की कोटा परमिट का लालच देकर ध्वंस लेते हैं। इस प्रकार राजनीति का



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या को अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वैगल) स्वरूप उभरकर पाठक के सामने  
लाते हैं। इन पंक्तियों ने महत्वपूर्ण  
श्रुतिक) निशई हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

**दृष्टि**  
The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9  
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356  
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiILAS.com  
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण को प्रकट कीजिये। क्या यह दृष्टि उपन्यासकार यशपाल की नारी-दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है? तार्किक उत्तर दीजिये।

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

‘दिव्या’ यशपाल द्वारा रचित उपन्यास है। ‘दिव्या’ की नारी-चेत्ता यशपाल ने इस उपन्यास के विभिन्न परित्रों जैसे प्रेस्थ, बौद्ध, स्थविर, मारिश इत्यादि के द्वारा प्रतिपादित की है।

‘मारिश’ चार्वाक दर्शन का समर्थक है। अतः वह परलोक का खण्डन करता है, तथा इहलोक के पद में है। भारतीय दर्शनों में चार्वाक ही ऐसा दर्शन है जहाँ ‘परलोकवाद’ का खण्डन किया गया है। मारिश का मत है कि भौतिक वस्तुओं अर्थात् जड़ से चेतन का निर्माण होता है। इस तरह इस सृष्टि में मानव सभ्यता के निर्माण में नारी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मारिश कहता है -

“नारी सृष्टि का साधन है।”

मारिश का मत है कि नारी की सृष्टि ने प्राकृतिक रूप से आकर्षण-शक्ति प्रदान की है जिसके प्रति पुरुष आकर्षित हो सृष्टि के निर्माण में सहायता करें। मारिश इस विचार की व्यक्त करते हुए दिव्या के



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मूल्य - कला की प्रशंसा करते हुए कहता है -

“ तुम्हारी कला तुम्हारी आकर्षण - शक्ति का निष्कार मात्र है। जो नारी में सृष्टि की आदि - शक्ति है। ”

मारिश नारी के नारीत्व की पूर्ति उसके सृजन शक्ति में ही देखता है। तभी तो वैष्णव शिला पर नारी के मधुभाँगी को उभारकर वह उसे पूर्ण कृति कहता है।

समीक्षकों का यह मत है कि मारिश की नारी दृष्टि दरअसल यशपाल की ही नारी - दृष्टि है। यशपाल मार्क्सवादी लेखक थे। मार्क्सवाद निश्चित तौर पर भौतिक जगत को सबसे महत्वपूर्ण मानता है। इस दृष्टि में जगत के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निर्गमन वाली नारी को महत्व देना उनकी स्वाभाविक सन्तोदशा होगी। मार्क्सवाद का एक महत्वपूर्ण पक्ष है समतामूलक समाज की स्थापना करना। 'मारिश'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जब पिछा की से 'आत्म्य के आदान प्रदान' का अनुरोध करता है, तब यह स्पष्ट होता है कि उसकी दृष्टि में नारी का स्थान वहाँ होना चाहिए, जहाँ उसे अपने पुरुष साथी के समकक्ष अधिकार मिलें।

मार्क्सवाद सामाजिक व्यवस्थाओं में पिछी विषमताओं का विरोध करता है। विवाह - व्यवस्था की भी नारी के लिए निहित अंतर्विरोध की स्थिति को भी स्पष्ट इस रचना में दिखाया गया है।

इसके अतिरिक्त, मार्क्सवाद समस्याओं का असली कारण यथार्थ में खोजता है। मारिश जब पिछा की नारी की समस्याओं का मूल कारण बताते हुए कहता है,

“नारी सामाजिक व्यवस्था में ओछा है, प्राकृतिक व्यवस्था में नहीं।”

तब यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी की समस्याएँ सामाजिक कारणों से हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पश्चात् की नारी-



दृष्टि मारिश के द्वारा व्यक्त हुई है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल में निहित रेणु की राजनीतिक चेतना का उद्घाटन कीजिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

( 'मैला आँचल' पाणीश्वर नाथ रेणु की कृति है। इसके माध्यम से उन्होंने तत्कालीन भारत के राजनीतिक स्थितियों को चित्रित किया है।

क) 'कालीचरण' के माध्यम से भारतीय राजनीति में 'समाजवादी' मूल्यों को दिखाया है।

ख) 'नेहरू', 'भांधी', इत्यादि नेताओं के प्रत्यक्ष नाम लेकर भारत में महत्वपूर्ण राजनेताओं की लोकप्रियता दिखाई है।

ग) संश्लेष के संघर्ष के माध्यम से वंचित वर्गों में जागृत हो रही राजनीतिक चेतना को दिखाया गया है।

घ) स्वतंत्रता के मूल्यों के पूर्ण न हो पाने की कसक भी इस उपन्यास



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

में दिखती है।

"~~क~~ मुराज मिल गया, मुराज ।"

'मुराज' की एक 'फल' ऐसा दिखाया गया है जिसके कई टुकड़े करनी की जागे तैयार हैं हैं।

ओ (1) 14 (ई लाई)

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्बू-अंडारी द्वारा लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास का नामकरण वैश्य सारगर्भित एवं सतीकात्मक है।

'महाभोज' शब्द का अर्थ है किसी की मृत्यु पर होने वाला भोज। प्रश्न यह उठता है कि यह 'महाभोज' किसकी मृत्यु का द्योतक है?

'महाभोज' दरअसल एक राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास के द्वारा लेखिका ने भारत की लोकतांत्रिक राजनीति की कुसूयताओं का उद्घाटन किया है। एक अर्थ में कह सकते हैं कि 'महाभोज' भारत के "लोकतंत्र की मृत्यु" का भोज है।

कथानक के अंतिम हिस्से में कई भोज आधा पार्टियों का संदर्भ है -  
जहाँ डी.आई.जी. सिंह अपनी पदोन्नति की पाली दे रहे हैं, वही सुकुल बाबु अपनी रूढ़ि के सफल होने की।



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इन सभी किरदारों की मदद से छि लेखिका ने राजनीति में चिपी गंदगी को उभारा है तथा दिखाया है कि किस प्रकार लोकतंत्र की हत्या हो रही है।

जहाँ दा साहब जैसे चरित्र जो ऊपर से अत्यंत उदात्त नजर आते हैं, वही भ्रष्टता से देखने पर निहायत अवसरवादी, दौलती किस्म के नेता दिखाई पड़ते हैं। एक तरफ वे कहते हैं-

“अखबारों को तो आज़ाद होता ही चाहिए।”, वही दूसरी ओर ‘दत्ता बाबू’ को ‘कोटा परमिट’ बढ़ाने का लालच देकर सरकार के पक्ष में खरीद लेते हैं।

राव, चौधरी जैसे नेता जो खरीद-फरोख्त की राजनीति में विश्वास करते हैं, धन और धन की लालच में अपने पक्षों की किरदारों से खुलकर समझौता करते हैं। सुकुल बाबू जैसे नेता जो अवसरवादी मानसिकता की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



न में

Write  
in space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतिमूर्ति गमर आते हैं -

“ बिसू की मौत । लगता है जैसे  
थाली में परसकर मौका सामने  
आ गया हो । ”

इन सभी 'गिद्ध' लकी चरित्रों के द्वारा  
किस प्रकार लोकतंत्र का मखौल बनाया  
जाता है, यह हम उपन्यास में दिखाया गया  
है। 'बिसू' की मौत के बाद बिंदु अब  
जहता है -

“ क्योंकि वह जिंदा था । जी-जिंदा है,  
वै जी नहीं सकते हम देश में । सार  
फिर ६ जाते हैं कुत्ते की मौत । ”

बिंदु तो ऐसा लगता है कि वह इसके द्वारा  
सारी लोकतंत्र में नैतिक मूल्यों की मौत  
पर लौ रहा है।

इस प्रकार 'महाग्रीव' नाम से  
कहानी का पूरा सार जाहिर होता है।

कृपया इस स्थान में  
कुछ न लिखें।

(Please don't write  
anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) आपके मत से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कौन-सा है और क्यों?

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में आंचलिक उपन्यास की परंपरा में फणीश्वरनाथ रेणु ने "मैंला आंचल" के द्वारा अभूतपूर्व योगदान दिया है।

इसके पूर्व भी कुछ लेखकों ने आंचलिक उपन्यास लिखे - जैसे शिवप्रभुजन सहाय। किन्तु रेणु की लेखनी ने इस परंपरा को सही रूप में स्थापित किया। इसके अलावा मार्गजुन, रामचंद्र रायव शत्यादि ने भी आंचलिक उपन्यास लिखे, किन्तु रेणु का स्थान सर्वोच्च ही रहा।

"मैंला आंचल" रेणु की पहली कृति है। इसके बाद भी वह इतनी मुहूर्त है कि उनकी 'परती परिकथा' भी इसका मुकाबला नहीं कर सकी।

मैंला आंचल की सर्वश्रेष्ठ साक्ष्य करने में जिन कारणों का योगदान है, वे हैं -

क) मैंला आंचल की भाषा -



यान में  
।  
write  
this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न  
संख्या के अतिरिक्त कुछ  
न लिखें।

(Please do not write  
anything except the  
question number in  
this space)

लोकशासन, लोकगीत, व्यवस्था - को प्रयोग  
ने इसे आंचलिक शक्ति - सूरत प्रधान  
किया।

“ गाय जो आवे है तोहरी विचारी सुरतिय,  
साले जिया मैं तीर जी । ”

के जीवन  
ख) आंचल का तत्स्थतापूर्ण चित्र : रेणु  
ने भूमिका में स्वयं की ही लिखा  
है -

“ इसमें फूल भी हैं, शूल भी । ”  
स्पष्ट है कि वे अपने आंचल का तत्स्थतापूर्ण  
चित्रण करने चाहते थे।

ग) नायक की भूमिका में स्वयं आंचल हैं।

ही है  
आंचलिकता का

9  
20

कृपया इस स्थान में  
कुछ न लिखें।

(Please don't write  
anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में राजनीतिक उपन्यास की परंपरा विरल है। यद्यपि 'झूठा सच', 'मैंला आंचल' जैसी कुछ रचनाएँ राजनीति की अपनी संवेदना का भाग बनती हैं, किन्तु तब भी, जिस प्रकार 'महाभोज' में राजनीति के मुख्य पक्षों की दिखाया गया है, वह अप्रतिम है।

लेखिका मन्नू - गंडरी ने वैदिक संश्लिष्ट तरीके से राजनीति और अपराध के संबंधों पर प्रकाश डाला है। मुक्तिवीथ की कविता 'अंधेरे में' में जो राजनेता, नौकरशाह, अपराधी केवल अंधेरे के समय ही साथ होते हैं, 'महाभोज' में दिन के उजाले में खुलेआम साथ घूमते हैं।

महाभोज के एक प्रमुख किरदार 'दा साहब' के सहायकों में आपराधिक प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। 'दा साहब' जो कि मुख्यमंत्री हैं, इतने उच्च पद पर होते हुए भी 'जोरावर'



ध्यान में  
लिखें।  
(Please do not write  
anything except the  
question number in  
this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न  
संख्या के अतिरिक्त कुछ  
न लिखें।  
(Please do not write  
anything except the  
question number in  
this space)

ऐसी सहायकों की साथ रखते हैं। औरावर  
सरोहा गाँव का व्यक्ति है जो 'बिसू' की  
सहायता के लिए दोषी है। इसके बाद  
भी वह साहब उसे संरक्षण प्रदान करते हैं।  
इस संदर्भ में लेखिका का व्यंग्यपूर्ण  
कथन है -

“ मारनेवालों की शह दो, और  
मरनेवालों की हमदर्दी। दोनों हाथों  
में लट्टू। ”

इसी प्रकार जब दा साहब, मुकुल बाबू  
गाँववालों के समक्ष बात करने जाते हैं,  
तो वह गाँववालों के समूह की लेकर। ~~अपराधी~~  
लोकतांत्रिक व्यवस्था में ऐसे अर्थ बनाकर  
लोगों की मजबूर करता राजनीति के  
अपराधीकरण का ही प्रतीक है।

हरिजनो के खिलाफ होने वाली  
आगजनी के मामले में जब 'बिसू',  
सबूत जुटाता है तो राजनीतिक जायदे के  
लिए उसे मरवा दिया जाता है। तथा बाद  
में उसकी मौत की एक अप्सर के

कृपया इस स्थान में  
कुछ न लिखें।  
(Please don't write  
anything in this space)



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

रूप में देखा जाता है।

“ बिसू की मौत । लगता है जैसे  
यात्री में परस्पर मौत का सामना आ  
गया है । ”

लोकतंत्र की <sup>का</sup> महत्वपूर्ण अंग है मीडिया ।  
उसे भी 6 'दा साहब' जैसे का मोह  
देकर खरीद लेते हैं एवं अपने स्वार्थ  
के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं ।

इन सभी कारणों से 'महाभौज'  
अत्यंत सघन रूप से राजनीति और  
अपराध के संबंधों पर प्रकाश डालता है ।

अच्छा 8 1/2  
15



स्थान में  
हैं।

Don't write  
in this space

कृपया इस स्थान में प्रश्न  
संख्या के अतिरिक्त कुछ  
न लिखें।

(Please do not write  
anything except the  
question number in  
this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के नारी-चिन्तन पर प्रकाश डालिये।

15

कृपया इस स्थान में  
कुछ न लिखें।

(Please don't write  
anything in this space)

दिव्या का नारी-चिन्तन विशिष्ट चरित्रों के  
माध्यम से व्यक्त हुआ है -

क) प्रेस्थ - : प्रेस्थ पृथुसेन का चित है।

वह अपने पुत्र की समझाते हुए कहता है -

“ ~~सब~~ नारी जीवन का उद्देश्य नहीं;  
केवल एक साधन मात्र है। ”

“ सफल मनुष्य अनेक स्त्रियों का भोग  
कर सकता है, किन्तु सफलता के  
अनेक ही अवसर नहीं आते।

त्रिभु पृथुसेन

ख) बौद्ध ~~संन्यास~~ के माध्यम से यशपाल दिखाते  
हैं कि जिस बौद्ध धर्म में ~~क~~ वर्गीय  
विषमताओं के प्रति तिरस्कार की भावना है,  
वही नारी के प्रति उद्देश्यपूर्ण दृष्टि।

“ त्रिभु के धर्म में नारी व्याज्य है। ”

ग) मारिश इस उपन्यास का महत्वपूर्ण चरित्र  
है। उसके अनुसार नारी पुरुष के  
समान अधिकारों की अधिकारी है।

वह कहता है कि नारी पृथ्वी का केन्द्र है  
एवं उसे ~~क~~ अपने 'मौलिक अधिकार'



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

की पूर्ति करनी चाहिए। वह कहता है -

“ नारी सृष्टि का साधन है। ”

घ) रूपबीर : वह वर्ण-व्यवस्था का समर्थक है तथा नारी की कुलवधू, कुलमाता के बंधनों में बंधने का पक्षधर है।

ङ) पिण्या , जो इस उपन्यास की प्रमुख किरदार है, वह आरंभ में नारी की पयनीय स्थितियों के लिए राज्य की दोषी मानती है। किन्तु मारिश के समझाने के बाद वह समझ जाती है कि समाज में नारी की स्थिति सामाजिक ढाँचों के कारण है। वह जान जाती है कि -

“ नारी का कर्म निर्वाण नहीं ; सृष्टि है। ”

नारी -  
जुलन  
आत्म-आत्म  
सम्य-य  
मारिश कहता है  
कि वह स्त्रीत्व  
के चरित्र प्रयोग  
जुलन समझती  
कहा जा रहा है

अच्छा 8 1/2  
15



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9  
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356  
ई-मेल: [helpline@groupdrishti.com](mailto:helpline@groupdrishti.com), वेबसाइट: [www.drishtiIAS.com](http://www.drishtiIAS.com)  
फेसबुक: [facebook.com/drishtithevisionfoundation](https://www.facebook.com/drishtithevisionfoundation), ट्विटर: [twitter.com/drishtiias](https://twitter.com/drishtiias)

Copyright - Drishti The Vision Foundation